खण्ड 1, अंक 1
शुक्रवार, 22 पौष, शक संवत् 1922
(12 जनवरी, 2001 ई0)

उत्तरांचल विधान सभा

की

कार्यवाही

—: 0 :—

(अधिकृत विवरण)

(अनन्तिम विधान सभा, प्रथम सत्र 2001)

(खण्ड 1 में 3 अंक हैं)

उत्तरांचल विधान सभा सचिवालय, (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक :–
उप निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, रुड़की, उत्तरांचल (भारत)
2001

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	क
माननीय सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	1
अध्यक्ष पद हेतु निर्वाचन	1-3
माननीय सदस्यों द्वारा निर्वाचित अध्यक्ष के प्रति व्यक्त किये गये उद्‌गार	3-20

उपस्थिति पंजिका

1. श्री अजय भट्ट
2. श्री अम्बरीष कुमार
3. श्रीमती इन्दिरा ह्रदयेश
4. श्री ईसम सिंह
5. श्री केदार सिंह फोनिया
6. श्री कृष्ण चन्द्र पुनेठ़ा
7. काजी मो0 मोइउद्दीन
8. श्री के0 सी0 सिंह बाबा
9. श्री तिलक राज सिंह बेहड़
10. श्री तीरथ सिंह रावत
11. श्री नारायण सिंह राणा
12. श्री नारायण राम दास
13. श्री नित्यानन्द स्वामी
14. श्रीमती निरूपमा गौड़
15. श्री प्रकाश पन्त
16. श्री विशन सिंह चुफाल
17. श्री भगत सिंह कोश्यारी
18. श्री भारत सिंह रावत
19. श्री मातबर सिंह कण्डारी
20. श्री मुन्ना सिंह चौहान
21. श्री मोहन सिंह रावत "गांववासी"
22. श्री रघुनाथ सिंह चौहान
23. श्री रमेश पोखरियाल "निशंक"
24. श्री राजेन्द्र सिंह
25. श्री राम सिंह सैनी
26. श्री लाखी राम जोशी
27. श्री बंशीधर भगत
28. श्री सुरेश चन्द्र आर्य
29. श्री हरवंश कपूर
30. श्री ज्ञान चन्द

नोट :– दिनांक 12–1–2001 को सभी माननीय सदस्य उपस्थित रहे।

(श्री प्रोटेम अध्यक्ष के पीठासीन होने पर)

मा0 सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

श्री प्रोटेम अध्यक्ष–

सबसे पहले मैं उन माननीय सदस्यों से गुजारिश करूँगा कि जो माननीय सदस्य कल शपथ ग्रहण नहीं कर सके, अगर आज यहाँ पर उपस्थित हों तो वह शपथ लेने का कष्ट करें।

[(निम्नलिखित माननीय सदस्यों ने शपथ ग्रहण अथवा प्रतिज्ञान किया)]
(श्री रघुनाथ सिंह चौहान और डाक्टर श्रीमती इन्दिरा हृदयेश)

सचिव, विधान सभा–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से श्री राज्यपाल के निम्नलिखित आदेश दिनांक 26 नवम्बर, 2000 को पढ़कर सुनाता हूँ :–

''भारत का संविधान'' के अनुच्छेद 180 (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करके मैं, सुरजीत सिंह बरनाला, राज्यपाल उत्तरांचल, श्री काजी मोहम्मद मोहिउद्दीन, जो उत्तरांचल की अनन्तिम विधान सभा के सदस्य हैं, को उस समय तक के लिये जब तक संविधान के अनुच्छेद 178 के उपबन्धों के अनुसार उत्तरांचल विधान सभा अध्यक्ष का निर्वाचन न कर लिया जाय, अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिये नियुक्त करता हूँ।''

अध्यक्ष पद हेतु निर्वाचन

श्री प्रोटेम अध्यक्ष–

अध्यक्ष पद के लिये निम्नलिखित माननीय सदस्यों के नाम–निर्देशन पत्र प्रस्तुत किये, जिन्हें मैं पढ़कर सुना रहा हूँ :–

क्रमांक	नाम–निर्देशित अभ्यर्थी	प्रस्तावक	समर्थक
1.	श्री प्रकाश पंत	श्री नित्यानन्द स्वामी	श्रीमती निरूपमा गौड़
2.	श्री प्रकाश पंत	श्री नारायण राम दास	श्री मातबर सिंह कण्डारी
3.	श्री प्रकाश पंत	श्री केदार सिंह फोनिया	श्री नित्यानंद स्वामी
4.	श्री प्रकाश पंत	श्रीमती निरूपमा गौड़	श्री अजय भट्ट
5.	श्री प्रकाश पंत	श्री भगत सिंह कोश्यारी	श्री नारायण सिंह राणा
6.	श्री प्रकाश पंत	श्री रमेश पोखरियाल "निशंक"	श्री मातबर सिंह कण्डारी
7.	श्री प्रकाश पंत	श्री नारायण सिंह राणा	श्री भगत सिंह कोश्यारी
8.	श्री प्रकाश पंत	श्री तीरथ सिंह रावत	श्री भगत सिंह कोश्यारी
9.	श्री प्रकाश पंत	श्री मातबर सिंह कण्डारी	श्री मोहन सिंह रावत
10.	श्री प्रकाश पंत	श्री मोहन सिंह रावत "गाँववासी"	श्री मातबर सिंह कण्डारी
11.	श्री प्रकाश पंत	श्री भारत सिंह रावत	श्री मोहन सिंह रावत "गाँववासी"
12.	श्री प्रकाश पंत	श्री मुन्ना सिंह चौहान	श्री बंशीधर भगत
13.	श्री प्रकाश पंत	श्री अजय भट्ट	श्री बंशीधर भगत
14.	श्री प्रकाश पंत	श्री बंशीधर भगत	श्री अजय भट्ट
15.	श्री प्रकाश पंत	श्री राम सिंह सैनी	श्री अम्बरीष कुमार

माननीय सदस्यगण, जैसा कि आप जानते हैं कि इस अध्यक्ष पद के लिये एक ही नाम के 15 प्रस्ताव आये हैं और कोई दूसरा नौमिनेशन नहीं हुआ है, लिहाजा सर्वसम्मति से मैं उनके चुनाव का एलान करता हूँ। मुझे खुशी है कि श्री प्रकाश पन्त सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये।

(श्री प्रकाश पन्त सर्वसम्मति से अध्यक्ष विधान सभा निर्वाचित हुए)

(तालियों की थपथपाहट)

मान्यवर, लगभग पौने दो महीने मुझे प्रोटेम स्पीकर के पद पर कार्य करने का अवसर मिला। इस दौरान महामहिम राज्यपाल जी, माननीय मुख्य मंत्री जी, माननीय सदस्यगण, पूरी कैबिनेट के सदस्यों का मुझे सहयोग मिला और उसी के साथ ही विधान सभा के अधिकारियों और कर्मचारियों का जो सहयोग मिला, उसके लिये मैं आप सब के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। वास्तव में माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो बर्ताव किया वह ताजिन्दगी मुझे याद रहेगा। मुझे खुशी इस बात की है कि हमारे नेता सदन जितने अनुभवी और तजुर्बेकार हैं वहीं श्री प्रकाश पन्त जी युवा पीढ़ी से ताल्लुक रखने वाले अध्यक्ष पद के लिये सर्वसम्मति से चुने गये और मैं उम्मीद करता हूँ कि यंग ब्लड और अनुभवी मुख्य मंत्री जी मिलकर इस नये प्रदेश को एक नयी दिशा देंगे। मान्यवर, इस दुनिया में बड़े लोग भी होते हैं और छोटे लोग भी होते हैं। बड़े लोग आसमान से टूटकर नहीं आते बल्कि उनके विचार और उनके कार्य उनको बड़ा बनाते हैं।

मान्यवर, उत्तर प्रदेश विधान सभा में ही नहीं बल्कि पूरे डैमोक्रेटिक वर्ल्ड में श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन जी ने एक वाक्य कहा था और उस पर अमल भी किया, यह उस दौर में जब मेन अपोजिशन मुस्लिम लीग थी, नवाबजादा अली खान और चौधरी खलीपुर जमा जैसे दिग्गज नेता वहां थे। श्री पुरूषोत्तम दास जी ने कहा कि आप में से एक भी सदस्य खड़ा होकर यह कह दे कि मैं माननीय पुरूषोत्तम दास जी आप पर विश्वास नहीं रखता, तो मैं उसी वक्त त्याग–पत्र दे दूँगा। यह वाक्य सुनहरे हरफों में लिखा गया। इसके जवाब में मुस्लिम लीग के नेताओं ने खड़े होकर कहा था कि कभी अविश्वास का ख्याल तो हमारे दिल में आयेगा ही नहीं और उन्होंने यह भी कहा कि जो कुछ मैं यह कह रहा हूँ, आज के लिये नहीं कह रहा हूँ, जब तक मैं स्पीकर रहूँगा मेरा यह कौल स्टैण्ड करेगा। मैं सोचता हूँ कि श्री प्रकाश पन्त जी इसको अपना चिरागेराह बनायेंगे और इस काम को चलाने के लिये उसी कदम पर चलेंगे।

हमें खुशी है कि श्री प्रकाश पन्त जी पिथौरागढ़ में पैदा हुए और आपने नगर पालिका का चुनाव भी लड़ा और इसके बाद 1998 में विधान सभा के स्थानीय निकाय में भी आप चुने गये और दोनों चुनावों में आपने सबसे अधिक वोट लिये, यह भी आपकी पॉपुलेरिटी की मिसाल है। इसके अलावा आप विदेश दौरे पर भी जा चुके हैं। बहुत अनुभवी हैं, योग्य इन्सान हैं और मुझे इस बात की भी खुशी है कि जहां सत्ता पक्ष के लोगों ने आपके नामांकन का प्रस्ताव किया, वहीं अपोजिशन के लोगों ने भी आपके नाम का प्रस्ताव किया। माननीय श्री सैनी जी और श्री अम्बरीष जी तथा कई नेतागण ने आपको सहयोग

दिया। मैं उम्मीद करता हूँ यह उत्तरांचल का प्रथम सत्र शुरू हो रहा है और एक ऐसी मिसाल कायम करेगा। यहां की विधान सभा, जो पूरे हिन्दुस्तान में अपनी नजरी बनेगी अपने आप यह एक छोटी सी विधान सभा है तो यहां खुशी इस बात की है कि सब लोगों की बात को सुनने का अवसर माननीय अध्यक्ष जी आपको प्राप्त होगा। हम लोगों ने, अपोजिशन के लोगों ने भी यह तय किया है, इसमें श्री मुन्ना सिंह चौहान जी भी शामिल हैं, हम हुल्लड़बाजी और हुड़दंग बिल्कुल नहीं करेंगे। जनता के हितों की रक्षा करेंगे और कानून का सम्मान करेंगे। हमारे इस पक्ष का भी आप ध्यान रखेंगे। हम तादाद में बहुत कम हैं। जब अपोजिशन की बात नहीं सुनी जाती है तभी यह नौबत आती है और लोग वैल पर आते हैं और हुल्लड़ मचता है। इसलिये यहां से हम लोगों ने तय किया है कि सिर्फ हैल्थी क्रिटिसिज्म किया जायेगा, कानून का सम्मान किया जायेगा और रचनात्मक कार्य किये जायेंगे। जो सरकार अच्छा कार्य करेगी, उसकी सराहना हम सब लोग करेंगे। मुझे उम्मीद है कि यह विधान सभा पूरे हिन्दुस्तान के लिये एक चिरागेराह साबित होगी।

मैं माननीय पन्त जी से भी गुजारिश करूँगा कि मान्यवर, आपके जुबान से जो एक-एक लफ्ज निकलेंगे इस पीठ पर बैठकर वह आने वाली नस्लों के लिये नजीर बनें। हम इस दुनिया में नहीं रहेंगे, जितने सदस्य बैठे हैं, सबको जाना है लेकिन वह कार्य जो हम कर देंगे और व्यवस्थायें जो हम करेंगे वह यहां पर लिखा जायेगा और हजारों हजार साल तक पीढ़ियाँ उसको पढ़ेंगी। मुझे उम्मीद है और विश्वास है कि हम एक मिसाली विधान सभा इस विधान सभा को बनायेंगे और इस पीठ से दी गई रूलिंग्स पूरे हिन्दुस्तान में पढ़ी जायेगी और पार्लियामेंट में भी उनका उदाहरण दिया जायेगा और यह उत्तरांचल विधान सभा पूरे भारत के लिये मसलेराह साबित होगा। मैं इन्हीं शब्दों के साथ आप सबका एक बार शुक्रिया अदा करता हूँ और सब की तरफ से माननीय अध्यक्ष श्री प्रकाश पन्त जी को बधाई देता हूँ।

श्री नित्यानन्द स्वामी-

मान्यवर, आप हम सब लोगों के अग्रज हैं। जिस समय यह प्रश्न आया कि हमारे प्रोटेम स्पीकर कौन होंगे तो सबने एक ही राय दी कि आपसे बेहतर हमारे माननीय सदस्यों में कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है जो उस उच्च आसन पर बैठकर हम सभी लोगों का मार्ग-दर्शन करेगा।

मान्यवर, मैं आपको शायद सम्भवतः श्री सैनी जी ने और श्री अम्बरीष जी यहां पर बैठे हुए हैं, हम आपको वर्षों से जानते हैं। हम लोगों ने जन प्रतिनिधि देखें हैं। बहुत से सक्रिय होते हैं और कुछ सब तरह की गतिविधियों में रहते हैं। आपने जो अपनी मिसाल कायम की है उत्तर प्रदेश के अन्दर, उस मिसाल का कोई मुकाबला नहीं है। क्योंकि आपने इतने वर्षों तक इस उत्तर प्रदेश की शोभा बढ़ायी है और मंत्री के पद पर भी आप रहे। लेकिन आपके कार्यकाल की तारीफ ही हुई है और आप पर किसी ने अंगुली नहीं उठायी। यदि एक व्यक्ति 2 महीने के लिये जन प्रतिनिधि रहा और उस पर कोई अंगुली उठाये नहीं, वह इतना ज्यादा महत्व नहीं रखता। महत्व तब होता है जब बहुत अधिक समय तक कोई जन प्रतिनिधि किसी पद पर रहे और जनता ने हमेशा यह कहा कि वह बहुत अच्छे हैं। इतने अच्छे हैं कि अच्छाई की कोई दूसरी मिसाल मिल ही नहीं सकती है। आपने इतने दिन

हमको लगभग दो महीने तक आशीर्वाद दिया और हम लोगों की सभी गतिविधियों में आपने हिस्सा लिया। जब भी हम आपके साथ गये तो आपने बहुत प्यार और मोहब्बत के साथ सलूक किया। आज भी आपने इस सीट की शोभा बढ़ायी है। जो कुछ शब्द आपने कहे वह बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि पुरूषोत्तम दास जी की मिसाल, जितने भी पीठासीन अधिकारी हैं, उनके लिए एक मिसाल है क्योंकि उन्होंने एक ऐसा काम कर दिया था जिस पर हम सब लोगों को चलना चाहिये। आपने दो दिन तक इस सदन की कार्यवाही भी संचालित की और इसके अतिरिक्त पहले भी हम सब लोगों ने बैठकर काम किया है। हम आपको हमेशा अग्रज मानेंगे।

यह भी अच्छी बात कही माननीय विरोधी दल के नेताओं से, चूँकि उधर विपक्ष में कोई सदस्य नहीं है सभी नेता हैं, उनके साथ हम कल बैठे थे, इतना अच्छा माहौल था शायद इस विधान सभा के अन्दर एक मिसाल कायम करेंगे कि सारे भारतवर्ष में यह विधान सभा ऐसी हो जिसमें सकारात्मक विरोध होता है। यहाँ पर कोई ऐसा प्रदर्शन नहीं होता, जिसे अच्छा नहीं कहा जाता है। आपने हमें मार्गदर्शन दिया, हम लोग हमेशा आपके आभारी रहेंगे और जो कुछ भी हम लोगों ने दो महीने तक काम किया और आपने उस उच्च पीठ पर बैठकर जो आशीर्वाद दिया हम शायद सभी लोग आपके आभारी रहेंगे। आगे भी आपके प्रति हमारा सम्मान ऐसा ही रहेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं श्री प्रकाश पन्त जी को तभी बधाई दूँगा जब आप उनको इस पीठ पर जाकर बैठा देंगे। मैं आपको बधाई देना चाहता हूँ कि हम सब लोगों को आपने इतना अधिक सम्मान दिया, प्यार दिया और मोहब्बत दी और इतना अच्छा मार्गदर्शन दिया। धन्यवाद।

श्री राम सिंह सैनी–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपको अपनी ओर से और अपने दल की ओर से बधाई देना चाहता हूँ और आपने जो दो माह के समय में प्रोटेम स्पीकर के तौर पर जो काम किया वह अपने आप में एक मिसाल है। मान्यवर, जो विचार माननीय मुख्य मंत्री जी ने व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करते हुए कहना चाहता हूँ कि आप लगातार, एक–दो बार को छोड़कर, विधान सभा में जीत कर आते रहे हैं। इससे पता चलता है कि वहाँ की जनता आपसे कितनी प्रभावित है और आपने मंत्री के रूप में भी सकारात्मक कार्य किये हैं और इस प्रदेश के हित में भी काम किये हैं उनको भुलाया नहीं जा सकता है। आपने कहा कि इस पीठ से जो निर्णय होने चाहियें वह निष्पक्ष होने चाहियें। आपने जो यह निर्देश दिया है यह आने वाले अध्यक्ष के लिये प्रेरणा का काम करेंगे। आपने श्री राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन जी की बात कही और ए0जी0 खेर की बात की है और आज भी हमारी जो मदर स्टेट है उत्तर प्रदेश वहाँ पर माननीय अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी ने जो निर्णय दिये हैं, वह भी अपने आप में अद्वितीय हैं। आपके निर्णय से प्रजातंत्र मजबूत होता है और उसकी जड़ें मजबूत होती हैं। आपका यह अल्पकाल का पीरियड रहा हम तो चाहते थे कि आप लगातार इस पीठ पर बैठे रहें। एक बार मैं पुनः आपको मुबारकबाद देता हूँ इस आशा के साथ कि आने वाले समय में भी आप इसी तरह से कार्य करते रहेंगे और जनता आपसे मार्गदर्शन लेती रहे। धन्यवाद।

श्रीमती इन्दिरा हृदयेश–

माननीय अध्यक्ष जी, मुझे विलम्ब हुआ जिसके कारण मैं बहुत सारा ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकी, कल से लेकर आज तक। अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई जब मैंने पहली बार आपको इस कुर्सी पर देखा। विभिन्न पदों पर आप रहे। 1974 से लगातार आप एसेम्बली में रहे। आपने अपने क्षेत्र में और सार्वजनिक जीवन के क्षेत्र में उच्च मर्यादाओं का पालन किया। किसी ने भी आप पर अंगुली नहीं उठायी। मैं व्यक्तिगत आपके परिवार से सम्बन्धित हूँ और शायद यह अधिकार भी रखती हूँ और कहना चाहती हूँ कि आपका पूरा परिवार धार्मिक आस्था के साथ रहता है। आपने हमेशा उच्च परम्पराओं का पालन किया। आज जो सार्वजनिक जीवन में कमी दिखाई दे रही है पहाड़ के लोग बड़े नीर–क्षीर विवेक से देख रहे हैं। उन सबकी तरफ भी आपने ध्यान रखा। सार्वजनिक जीवन में जिस प्रकार के चरित्र की अपेक्षा की जाती है और जन सामान्य करती है, उसकी मिसाल को आपने कायम किया। एक वरिष्ठ साथी होने के रूप में भी आपने प्रोटेम स्पीकर के दायित्वों का भी निर्वाह किया। आज आपको सुनने का अवसर मिला। आपने हर चीज की तरफ इंगित किया और कहा कि हम सकारात्मक विरोध करेंगे और कोई हुड़दंग नहीं करेंगे। विपक्ष की तरफ भी आपने ऐसा कह कर इंगित किया, वहीं सत्ता पक्ष की ओर भी आपने इंगित करके कहा कि माननीय सदस्यों द्वारा जो प्रश्न उठाये जाते हैं उनका सकारात्मक जवाब आना चाहिये।

माननीय श्री स्वामी जी मुख्यमंत्री के रूप में यहाँ बैठे हैं आपको बहुत लम्बे समय तक एसेम्बली और विधान परिषद् का ज्ञान है। आप सबसे पुराने सदस्य हैं। विधान परिषद् में कम सदस्य होने के नाते हमें रूल्स और रैगुलेशन्स का ज्ञान रहा। श्री प्रकाश पन्त जी विधान परिषद् में पहली बार चुनकर नये सदस्य के रूप में आये हैं। माननीय श्री स्वामी जी के नेतृत्व में उनको भी काफी लाभ मिलेगा। मैं आज ही एक वक्तव्य पढ़ रही थी श्री मुन्ना सिंह चौहान जी का, कि एम0एल0सी0 कैसे एम0एल0ए0 बन सकते हैं और संविधान की धारा–3 को भी उन्होंने कोट किया। श्री पन्त जी ने पीठ पर बैठने से पहले ही धारा खोज ली। माननीय श्री मुन्ना सिंह चौहान जी भी यहाँ पर असम्बद्ध सदस्य के रूप में बैठे हैं। बहुत विद्वान और गुणी हैं। विधान परिषद् में रह कर माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो सभापति की हैसियत से निर्णय लिये, वह सब नजीरें हैं और नये अध्यक्ष के लिये भी काम में आयेंगी। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ। हम आपको हरिद्वार से अलग नहीं होने देंगे, हरिद्वार हमारे साथ रहेगा। यह एक संगम है। हम मिलजुल कर काम करेंगे। एक बार पुनः कहना चाहती हूँ कि आपने इस पीठ पर बैठकर विपक्ष, सत्ता पक्ष और चेयर को भी इंगित किया। लम्बे समय तक आपकी पताका फहराती रहे और मैं आपकी लम्बी आयु की कामना करती हूँ।

श्री मुन्ना सिंह चौहान–

मान्यवर, वास्तव में यह एक ऐतिहासिक क्षण है। इस सर्वोच्च पीठ पर बैठकर आपने जिस तरह से एक जज की हैसियत से कह लें या अध्यक्ष की हैसियत से कह लें, आपने जो कार्य किया वह इस विधान सभा के गरिमामय इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। जिस दिन आपने पहले दिन प्रोटेम स्पीकर की शपथ ली और आज के दिन तक

आपने हमारी सुख–सुविधाओं का जो ध्यान रखा, वह भी अपने आप में एक नजीर है। कल हम सभी लोगों को आपने शपथ ग्रहण करायी और इस सदन का जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य था– "इस सदन के अध्यक्ष का निर्वाचन", उसे आपने बहुत ही भली–भाँति सम्पादित कराया। मेरे लिये तो यह व्यक्तिगत गौरव की बात है और निश्चित रूप से मेरे जीवन की एक बहुमूल्य धरोहर भी है, कि मुझे उत्तर प्रदेश विधान सभा में आपके सन्निकट रहने का अवसर मिला और समय–समय पर स्वस्थ संसदीय परम्पराओं की दीक्षा मिलती रही। जब कभी हम और आप हरिद्वार से ट्रेन से सफर करते थे तो उस यात्रा के दौरान भी आप स्वस्थ संसदीय परम्पराओं की बात किया करते थे। आपने मुझे एक उदाहरण भी दिया कि जब आप चौधरी चरण सिंह जी की सरकार में वन मंत्री थे तो आपको एक पत्रावली पर उनसे चर्चा करनी थी तो आपने मुख्य मंत्री जी से कहा था कि मुझे एक पत्रावली पर आपसे बात करनी है, तो उस पर उन्होंने आपसे कहा था कि मेरे पास इतना वक्त नहीं है यदि पत्रावली पर डिसकस करना है तो आप नेता विरोधी दल आदरणीय श्री नारायण दत्त तिवारी जी के पास जायें। मान्यवर, यह अपने आप में एक मिसाल है परन्तु आज हम अपने संसदीय जीवन में और अपने आचार–विचार में इतने छोटे हो गये हैं कि हम कतराते हैं कि सार्वजनिक जीवन में कहीं हमारी कोई शिकायत न हो जाय। हम उम्मीद करते हैं कि आप जैसे लोगों का हमें मार्गदर्शन मिलता रहे। हम लोग भी संसदीय परम्पराओं के अधीन रहकर अपना आचरण मर्यादित करेंगे यह मेरा दृढ़ निश्चय है।

आपने राजर्षि पुरूषोत्तम दास जी का उदाहरण दिया जो हिस्ट्री के अन्दर नजीर बन गई। उन्होंने कहा कि अगर इस पीठ पर जब तक मैं बैठा हूँ, किसी को अविश्वास प्रस्ताव लाने की जरूरत नहीं है। यदि कभी कोई माननीय सदस्य यह कह दे कि मेरा आप पर विश्वास नहीं है तो मैं उसे स्वयं अपने खिलाफ उसे ही अविश्वास प्रस्ताव मानकर इस पद से हट जाऊँगा। यह अपने आप में कोई छोटी बात नहीं है। हम तो चाहते थे कि आप इस पीठ पर आसीन रहें ताकि हमारी हौसला–अफजाई होती रहती लेकिन फिर भी एक संक्षिप्त पीरियड में आपने जो छाप छोड़ी, उसे हम अपनी धरोहर के रूप में हृदय में संजोकर रखे रहेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार पुनः आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

श्री अध्यक्ष–

ज्यों–ज्यों सुबह ढल रही है। एक आरजू मचल रही है कि नये अध्यक्ष को इस पीठ पर देखने की आरजू। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से और सदन के अन्य वरिष्ठ सदस्यों से दरख्वास्त करूँगा कि आप माननीय अध्यक्ष जी को यहाँ पर सीट में लाने का कष्ट करें।

(माननीय मुख्य मंत्री श्री नित्यानन्द स्वामी, माननीय श्री सैनी जी, माननीय श्री मुन्ना सिंह चौहान जी, श्रीमती इन्दिरा हृदयेश जी नव निर्वाचित अध्यक्ष, विधान सभा को लेने के लिये उनकी कुर्सी तक गये और फिर वहाँ से उन्हें लाकर माननीय अध्यक्ष, विधान सभा की पीठ पर आसीन करवाया।)

सदन की कार्यवाही माननीय श्री प्रकाश पन्त, अध्यक्ष, विधान सभा की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई।

श्री नित्यानन्द स्वामी–

मान्यवर, जैसा कि हमारे काजी जी ने कहा कि सदन के अन्दर आयु और जवानी– दोनों का मिश्रण है। आपकी योग्यता से हम सब लोग परिचित हैं। विधान परिषद् में आपने हमारे साथ कई वर्षों तक कार्य किया है। वहां पर श्री कोश्यारी जी थे, श्रीमती इन्दिरा हृदयेश जी थी, श्री तीरथ सिंह रावत जी भी थे, श्री राणा जी भी थे। मैं एक बात उस पीठ पर बैठकर देखता कि आप अपना होम वर्क अच्छा करके आते थे और जिस विषय को उठाते थे बहुत ही मुस्तैदी के साथ उठाते थे और बहुत ज्ञान के साथ उठाते थे। मैं समझता था कि बहुत सारे विषयों पर आपका ज्ञान बहुत गहन है। आपका अध्ययन गहन है और आपकी वाणी के ऊपर सरस्वती विद्यमान है। आपने सदन के अन्दर सदैव गरिमा बनाये रखी। हमने कभी ऐसी बात भी नहीं देखी कि आप सदन से अनुपस्थित रहे हों या आपने सदन के कार्यों में बहुत अच्छी तरह से भाग नहीं लिया। मुझे सदैव आपके प्रति बहुत अधिक सम्मान रहा। जिस समय यह बात तय हुई कि आप हमारे अध्यक्ष होंगे तो मुझे ऐसा लगा कि हमारा जो निर्णय हुआ है, जिसमें हम सब लोगों ने जो उस पक्ष में बैठे हमारे मित्र हैं या इस पक्ष में बैठे लोग हैं, हम सब लोगों को दो पक्षों के अन्दर माना जाता है लेकिन मेरी सदैव यह मान्यता रही है कि हम दोनों पक्ष के लोग थे परन्तु जिस उत्तरांचल प्रदेश में हम काम करते हैं, उसके विकास के लिये काम करते हैं और जो इस पीठ के ऊपर जो वरिष्ठ और ज्ञान में वरिष्ठ तो कभी आयु में वरिष्ठ जो हमारे सहयोगी बैठते थे वह इस बात के निर्णायक होते हैं।

सदन के अन्दर जब कभी कोई ऐसी बात हो और जिसके ऊपर निर्णय करना आवश्यक हो और न्याय प्रदान करने की आवश्यकता हो तो उस समय हम सब लोग उसे, पीठ की तरफ देखते हैं। यह भी आपको मालूम है कि सत्ता पक्ष की संख्या अधिक है। मैं यहाँ पर आपसे स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि हम सत्ता पक्ष की संख्या का कभी भी दुरूपयोग नहीं करना चाहेंगे। हम अपनी बात को तर्कों के साथ कहेंगे। हम अपनी बात आपके समक्ष रखेंगे। हम जिसे तथाकथित विरोध पक्ष कहते हैं और उनके सामने में भी अपनी बात को रखेंगे। और मुझे हमेशा आशा है कि जो सही बात होगी उसको सब लोग मानेंगे। ऐसा प्रजातंत्र के अन्दर जैसा कि अभी माननीय श्री चौहान जी ने एक उदाहरण दिया और आपने भी दिया। कभी भी हम किसी भी विरोधी दल के नेता को अपने से अलग नहीं मानते क्योंकि उनका ज्ञान, उनकी योग्यता, वे सब हमारे लिये मार्गदर्शक का काम करते हैं।

यहाँ पर हमारा सौभाग्य है कि जहाँ पर विपक्ष में बैठे माननीय सदस्य हैं, जैसा कि मैंने पूर्व में ही कहा कि वे सब के सब नेता हैं और अपने कार्यों के कारण नेता हैं। हमको यहाँ पर बड़ा अच्छा अवसर मिल रहा है। कुछ माननीय सदस्य नये भी हो सकते हैं, हम लोग कभी गलती भी कर सकते हैं, उनमें अनुभव की कमी हो सकती है, जिसे आप ठीक न समझें और मैं विपक्ष के माननीय सदस्यों से भी निवेदन करना चाहता हूँ कि हम यह चाहते हैं कि इस सदन का एक वातावरण बने जिससे लगे कि हम कोई दो नहीं हैं, हमारी जिम्मेदारियां अलग–अलग हैं। पूज्य पुरूषोत्तम दास टण्डन जी की बात रखी गई, उन्होंने कहा था कि मैं कांग्रेस की सदस्यता नहीं छोडूँगा और उन्होंने यह भी कहा था,

कि मैं कांग्रेस की सदस्यता को लेकर भी निर्दलीय की हैसियत से काम करूँगा। आप भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हैं। इस पीठ के बाहर जाकर अपने क्षेत्र में कहीं कोई बात प्रदर्शित कर दें लेकिन आज के बाद आप हम सब के हैं। आपके कार्य में और आपके व्यवहार में कभी कोई पक्षपात और कोई पार्टी की बात ऐसी नहीं होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। हमने आपको इस उच्च आसन पर सुशोभित किया और हम आशा करते हैं कि दोनों पक्षों को आप सम्मान देंगे और समान न्याय देंगे। एक बार मैं फिर से आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ और अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से बधाई देता हूँ। आप युवा पीढ़ी के हैं और आगे बढ़े। इस सदन के अन्दर आप जो निर्णय देंगे लोग जगह–जगह पर कहेंगे कि जब श्री प्रकाश पन्त जी अध्यक्ष थे तो उन्होंने यह निर्णय दिया था और लोग उसका अनुसरण करेंगे। धन्यवाद।

श्री राम सिंह सैनी–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं सर्वप्रथम आपको इस देव भूमि में नव सृजित राज्य के प्रथम विधान सभा के प्रथम अध्यक्ष के रूप में निर्विरोध अध्यक्ष होने पर अपने दिल की गहराइयों से मुबारकबाद और बधाई पेश करना चाहता हूँ। मुझे पुरूषोत्तम दास टण्डन जी का व्यक्तित्व आप में भी प्रतिबिम्बित होता है। इसी तरह की दाढ़ी उनकी भी थी और इसी तरह की दाढ़ी आपकी भी है। हमें आशा है कि उनके आदर्शों पर, उनकी परम्पराओं तथा उनके द्वारा किये गये निर्णय के अनुरूप माननीय अध्यक्ष जी, आपका आचरण भी रहेगा। ऐसी हमें पूर्ण आशा है। जहाँ तक इस पीठ का सवाल है, सर्वोच्च पीठ पर आप आसीन हैं, हमें पूर्ण आशा है कि पक्ष और प्रतिपक्ष पर आप एक नजर से काम करेंगे और एक निष्पक्ष निर्णय आप लेंगे।

मान्यवर, कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो उस चेयर पर बैठते हैं और उसको सुशोभित करते हैं परन्तु कुछ ऐसे होते हैं जो हर तरह से उसकी शोभा को बढ़ाते हैं। आप अपने कृत्यों और निर्णयों के अनुसार इस प्रकार की परम्परायें बनायेंगे, जिससे यह चेयर सुशोभित होगी। आज राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन जी की बात करते हैं, जो निर्णय उन्होंने इस पीठ से दिये और जो आचरण उनका रहा और जो नजीरें उन्होंने दी वह केवल प्रदेश के लिये ही नहीं अपितु देश के लिये अनुकरणीय हैं। चाहे राजर्षि पुरूषोत्तम दास जी हों, ए0जी0 खेर जी हों या बनारसी दास जी हों, जिन्होंने इस पीठ को सुशोभित किया है और वर्तमान समय में भी श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी ने जो आयाम स्थापित किये हैं, वह भी हमारे हृदय में हमेशा अंकित रहेंगी। ये जो आपके निर्णय होते हैं, कभी–कभी सरकारें आपके निर्णय पर चलती हैं। माननीय श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी का जो निर्णय हैं, मैं कहता हूँ कि वह एक ऐतिहासिक निर्णय है, जिसकी वजह से उत्तर प्रदेश की सरकार चल रही है, नहीं तो वह पहले ही गिर जाती।

मान्यवर, आप में निर्णय करने की क्षमता है। जहाँ तक विधान परिषद् की बात है, मैंने विधान परिषद् में भी बैठकर देखा है। डाक्टर वीरेन्द्र स्वरूप जी के जो निर्णय हैं और जिस तरह से वह सदन को संचालित करते थे, उसको मैं आज भी भुला नहीं सकता हूँ। इस तरह से सदन चलता था, पिन ड्राप साइलेन्स रहता था और उनके निर्णय से प्रभावित होते थे। माननीय मुख्य मंत्री जी जो उस पीठ से निर्णय होते हैं, उन्हें हमने पढ़ा है और

उन्हें हमने सुना भी है। और उनका भी अध्ययन हमने किया है, वह निर्णय निष्पक्ष आते रहे हैं, हमें पूर्ण आशा है कि आप भी निष्पक्ष रहेंगे और हमारे हितों की रक्षा आप ही करेंगे। यह तो आप जानते ही हैं कि हम संख्या में बहुत कम हैं और माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि उनके अनुभव से और उनके व्यक्तित्व से हमें पूर्ण आशा है कि हमारे हितों की रक्षा होगी लेकिन हमारे हितों की रक्षा करना आपका ही दायित्व है। हमें आशा है कि अपने दायित्व का निर्वहन ईमानदारी से और दयानतदारी से करेंगे। आप जानते हैं कि यह सदन पहली हमारी एसेम्बली है और पहले राज्य का सृजन हुआ है।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप अपने निर्णयों से कीर्तिमान स्थापित करेंगे, जिसे आने वाली पीढ़ियाँ पढ़ेंगी कि किस प्रकार के निर्णय माननीय अध्यक्ष, उत्तरांचल विधान सभा के पहले अध्यक्ष ने दी थी और किस प्रकार से वह निष्पक्ष निर्णय देते थे। आपके निर्णयों से डेमोक्रेसी मजबूत होती है और उसकी जड़ें गहरी पहुँचती हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों में प्रजातंत्र के ऊपर लोगों का विश्वास बढ़ता है। मात्र अगर यह हो सकता है तो आपके निर्णयों से हो सकता है। मुझे आशा है कि आपके निर्णय निष्पक्ष और प्रभावी होंगे। आपने विद्यार्थी जीवन से संघर्ष किया है और संघर्ष का रास्ता 1997 से अपनाया जबकि आपने उन विद्यार्थियों के लिये संघर्ष किया। इसके बाद, यह बहुत बड़ी बात है, यह आपने समझा कि सरकारी सेवा में रहते हुए समाज की सेवा नहीं की जा सकती है तो आपने सरकारी सेवा से त्यागपत्र देकर के यह रास्ता ग्रहण किया। सरकारी सेवा के बजाय समाज सेवा का रास्ता बहुत बेहतर होता है। इस समाज के लिये और हम सब के लिये आप एक मार्गदर्शक रहेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से आपको शत–शत बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आपके निर्णय निष्पक्ष रहेंगे।

श्रीमती इन्दिरा हृदयेश–

माननीय अध्यक्ष जी, अभी–अभी आपका निर्विरोध निर्वाचन हुआ है और आज आप इस उच्च आसन पर हैं। विरोध पक्ष और सत्ता पक्ष ने एक मत से आपको निर्वाचित करके उच्च परम्पराओं का पालन किया है। इस पद को विवादित न बनाकर उच्च मर्यादाओं का पालन किया, उसी प्रकार की अपेक्षा विपक्ष भी आप से करता है। इस उच्च शासन की जो मर्यादा है उसका पालन आप करेंगे और हम सबको आपका संरक्षण प्राप्त होता रहेगा। जहाँ तक मेरा व्यक्तिगत प्रश्न है, विधान परिषद् में मेरे सहयोगी के रूप में आप बैठे और बहुत नजदीक से, पूरे समय खासकर सत्तापक्ष के सदस्य नहीं बैठते हैं, लेकिन विपक्ष में हम पहली घंटी से आखिरी घंटी तक बैठने वाले थे, जिससे सभी लोग परेशान रहते थे। कोरम को पूरा करने का काम भी हमने किया, माननीय मुख्य मंत्री जी इसके लिये मुझे क्षमा करेंगे। आप सदन में बहुत लम्बे समय तक बैठे रहते थे और बड़े ध्यान से सुनते रहते थे रूलिंग्स को और नियमों का भी आप बहुत अध्ययन करते थे। जब उत्तरांचल विधेयक वहाँ पर आ रहा था तो आपने मेरे एक संशोधन के बारे में कहा कि इसका मतलब है कि आपने बाकी सबको खारिज कर दिया है। इसका मतलब है कि आपने बहुत ही बारीकी से वह संशोधन पढ़ा और मुझे लगा कि इस प्रकार अध्ययन सदन में बैठकर विधान परिषद् के वरिष्ठ सदस्यों से आपको बारीक ज्ञान प्राप्त करने की आपकी जिज्ञासा रही है।

माननीय मुख्य मंत्री जी ने सही कहा है कि वह भी जितनी बारीकी से आपको देखते रहे, उतनी ही बारीकी तरीके से हम भी आपको देखते रहे। एक पक्षपात हमारे और आपके बीच रहा–विदेश यात्रा की टीम में विधान परिषद् का जो कोटा था उसमें वह अवसर माननीय मुख्य मंत्री जी से हमको मिला। सम्भवतः कुछ माननीय सदस्य अपनी व्यस्तता के कारण नहीं जा सके। कॉमनवेल्थ पॉर्लियामेन्ट्री ऐसोसिएशन में बाहर जाने का हमें अवसर मिला उन देशों में जाने का अवसर मिला जहाँ सामान्यतः नहीं जा सकते हैं। चीन जैसे बड़े देश में भी हमें जाने का अवसर मिला, वहां पर आप हर कागज को पूरी तरह से अध्ययन करते थे और जानकारी करते थे। जब मुझे मालूम हुआ कि अध्यक्ष पद के लिए श्री प्रकाश पन्त जी का नाम तय हुआ है तो मैंने कहा बहुत ही सर्वाधिक अध्ययन करने वाला, ज्ञान के बारे में जानकारी करने वाला और नियमों तथा कानूनों से बंधे रहने वाले व्यक्ति का चुनाव हुआ है। अनुभव अपनी जगह पर महत्वपूर्ण होता है, लेकिन अध्ययन और जानकारी से अनुभवी व्यक्तियों के सम्पर्क में रहकर उसका प्रभाव अधिक हो जाता है। यह सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ है उस विधान सभा के चेयरमैन के रूप में यहां पर माननीय मुख्य मंत्री जी के रूप में बैठे हैं जब आप इस आसन पर बैठे होंगे तो यह संतोष आपको अपने आप ही हो गया होगा कि कहीं पर कोई दिक्कत आयेगी तो वहां पर स्वामी जी से मैं विचार विमर्श करूंगा। इस आसन पर लम्बे समय तक बैठे रहने के कारण उनको भी निष्पक्ष रहने की आदत पड़ गयी है। आज भी आप पर आरोप लग रहे हैं कि विपक्ष के प्रति आपकी सद्भावना ज्यादा है और आपका सोचना एक तरफा नहीं रहा है और निष्पक्ष होकर आप निर्णय करते रहे और ऐसे भी कठोर निर्णय करे जो सत्तापक्ष में बैठे हुए लोग हैं उनको अच्छा नहीं लगा। वह कठोर निर्णय भी आपने संसदीय मर्यादाओं के पालन के लिए किया।

आज यहां पर प्रकाश पन्त जी बैठे हैं, मैं समझती हूँ कि वह अपने अध्ययन के माध्यम से और आपके अनुभव के माध्यम से पूरी तरह से सदन को संरक्षण प्रदान करेंगे। मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानती हूं जिस क्षेत्र से वह आते हैं, जहां उनका वात्सल्य जीवन बीता है उस क्षेत्र से मेरा रिश्ता है। इसलिए मैं बहुत अच्छी तरह से आपको समझती हूं। इसलिए आप भी उच्च आदर्श, चरित्र और आचरण कायम करेंगे और संसदीय मर्यादाओं का एक इतिहास बनायेंगे। कम आयु के इस नवसृजित राज्य के प्रथम विधान सभा के अध्यक्ष बनने का गौरव आपको प्राप्त हुआ है और सर्वोच्च सम्मान आपको मिला है इस सम्मान की आप रक्षा करेंगे हम सभी आपके साथ हैं यह भरोसा हम आपको दिलाते हैं। धन्यवाद।

श्री भगत सिंह कोश्यारी–

मान्यवर, आज जब हम उत्तरांचल विधान सभा के पहले अधिवेशन में माननीय प्रकाश पन्त जी के रूप में अपने पहले अध्यक्ष जी का स्वागत कर रहे हैं तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। मैं विशेष करके इस अवसर पर इसलिए भी अपने को बहुत अधिक आनन्दित महसूस कर रहा हूं, आज एक बात आयी कि बहुत कम उम्र के अध्यक्ष उत्तरांचल विधान सभा में चुने गये हैं। जहां कम उम्र का ध्यान मुझे आया, आज जो 12 जनवरी को हमारे उत्तरांचल के पहले अध्यक्ष के रूप में जो यह पहला अधिवेशन शुरू हो रहा है मुझे उस युग पुरुष की याद आ रही है जिस युग पुरुष ने 12 जनवरी, 1963 को जन्म लिया था। जिस प्रकार से केवल आपने 3 वर्ष की अल्प अवधि में विधायी, संसदीय अनुभव प्राप्त

करने के बावजूद भी आपको यह गौरव प्राप्त हुआ है और आप यहां पर चुने गये हैं, उसी तरह से उस युग पुरुष ने भी 33 वर्ष के अन्दर विश्व के अन्दर विजय पताका फहरायी थी और इस देश की, उस अनादिकाल के शाश्वत धर्म और सनातन धर्म की पताका फहराई थी जिस तरह से आज सब लोग आपसे अपेक्षा कर रहे हैं विशेष कर प्रतिपक्ष के लोग कह रहे हैं, विपक्ष तो मैं नहीं कहता, वह इसलिए नहीं कहता कि शायद वह हमसे बहुत दूर है, परन्तु इतने नजदीक हैं कि सारे लोगों की ओर से आपके प्रति सद्भाव कृतज्ञ किया जा रहा है। उस महापुरुष ने भी इस विश्व के अन्दर एक विश्वबन्धुत्व के उस नारे का उद्घोष करके सारी दुनिया में एक नई क्रान्ति पैदा की थी। ऐसे महान संत विवेकानन्द जी की याद आ रही है। मेरा निश्चित रूप से विश्वास है कि उम्र किसी चीज के लिए शायद कोई पैमाना नहीं होती है जिस तरह से विवेकानन्द जी ने इतनी कम उम्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया था। उनके जन्म दिवस पर आज हम सब लोग और हमारा यह सौभाग्य भी है कि हमारा विधान सभा का पहला सत्र ही ऐसे अवसर पर शुरू हुआ है। आप भाग्यशाली हैं मैं सोचता हूं कि हम सभी लोग भी और सारे सदन के लोग भी भाग्यशाली हैं कि उनके जन्म दिन पर यहां पर बैठ रहे हैं। इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं।

मान्यवर, मैं आपको इसलिए भी बधाई देता हूं कि तब मुझे आदरणीय राम सिंह सैनी जी कह रहे थे, मैंने उनसे कहा कि आप की ओर से भी नामांकन होना है तो राम सिंह जी कह रहे थे कि भई राम के बिना तो आपका काम चलेगा ही नहीं। इस उत्तरांचल के अन्दर हम सब लोग मिलजुल कर सद्भाव के साथ काम करेंगे और ऐसा लगे कि सत्ता पक्ष और विपक्ष एक ही दिशा में चल रहे हैं। श्रीमती इन्दिरा हृदयेश जी कह रही थी कि माननीय मुख्य मंत्री जी उस गद्दी पर बैठे हैं इसलिए निष्पक्ष रहते हैं। मैं सोचता हूं कि हृदय में जो वास्तविकता है उसी वास्तविकता को बोलना चाहिए चाहे हम इस पक्ष में बैठे हों चाहे उस पक्ष में बैठे हों। ऐसे लगे कि विपक्ष भी हमारी तरफ से है तो ऐसे में हम अच्छे नये इतिहास का सृजन कर सकते हैं। मैं तो ऊपरी सदन में रहा हूं विधान परिषद् में इतनी परम्परा शायद न हो आप लोग जनता से चुन कर आये हैं और आपको कभी जोर से बोलना भी पड़ सकता है। इसलिए मान्यवर, मैं विश्वास करता हूं कि आपके कुशल संचालन में निश्चित रूप से हम सब लोग एक बहुत अच्छी नई परम्परा बनायेंगे और एक अच्छी नई दिशा इस राज्य को देंगे।

आज प्रकाश जी अध्यक्ष जी के रूप में यहां पर हैं और एक दिन बाद मकर संक्रान्ति का उत्सव आ रहा है और हरिद्वार में उत्सव मनाया जायेगा जहां पर पूरे देश के लोग आते हैं और माननीय अम्बरीष जी आप भी उसमें सहयोगी रहेंगे और यह सूर्य दक्षिण से उत्तरांचल की ओर आयेगा और एक नई ऊर्जा को लेकर उत्तरांचल की ओर आयेगा और आज चूंकि इस उत्तरांचल में प्रकाश जी एक नये प्रकाश के रूप में आ रहे हैं आपकी अध्यक्षता में हम सबको नया प्रकाश मिलेगा मैं आपको धन्यवाद देता हूं और साथ ही काजी साहब को भी धन्यवाद देता हूं और स्वागत करता हूं।

श्री मातबर सिंह कण्डारी–

मान्यवर, मैं सबसे पहले आपको बधाई देता हूँ कि कम उम्र में आप इस गरिमामय पद पर आसीन हुए। आपके विचारों से मैं भली–भाँति परिचित हूँ। जब भी मैं आपसे चर्चा

करता था तो आप उत्तरांचल की विभिन्न समस्याओं के बारे में राय व्यक्त करते थे और वह भी अवसर मिला जब विधान परिषद् में आप प्रश्न पूछा करते थे। मैं बहुत ही प्रभावित हुआ और मैं यह भी जानता हूँ कि आप बहुत ही सह्रदय हैं। एक बार आपने एक प्रश्न पूछा, शायद उसका उत्तर गलत था आपने दूसरी बार प्रश्न पूछना था परन्तु आपने कहा कि अब मैं प्रश्न नहीं पूछता क्योंकि अब हमारा उत्तरांचल राज्य बनने वाला है। एक तरफ बहिन इन्दिरा जी ने तो मेरी खाल खींचनी शुरू कर दी परन्तु आपनें मेरी बहुत बचत की।

मान्यवर, मै कहना चाहता हूँ कि उत्तरांचल का यह सौभाग्य है कि प्रथम उत्तरांचल राज्य को एक अनुभवी मुख्य मंत्री जी हमको मिले और दूसरे हमें प्रोटेम स्पीकर मिले जो कितने सरल और सौम्य हैं। एक दिन मैं लखनऊ में चल रहा था तो आप मायावती जी की सरकार में मंत्री थे और आप अकेले घूम रहे थे दूसरे दिन मैंने आपको देखा कि आप लक्सर में बिना शैडो के घूम रहे हैं। यह आपकी सरलता है। आपने इस विधान सभा का किस तरह से संचालन किया, उसके लिये हम आपके प्रति भी आभार प्रकट करते हैं। तीसरी बात यह है कि माननीय अध्यक्ष जी आप विद्वान हैं और युवा साथी हैं आप जैसे अध्यक्ष को पाकर इससे बड़ा हमारा सौभाग्य क्या हो सकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका मार्गदर्शन हमको मिलेगा। हम इस उत्तरांचल का बहुमुखी विकास करेंगे। प्रतिपक्ष और सत्ता पक्ष हमारी एक टीम है, आपके जो सुझाव हों बह उत्तरांचल के हित में हों। माननीय सदस्यगण अनेक प्रश्न पूछेंगे और माननीय सदस्य का उत्तर सही जाना चाहिये और उसे संतुष्ट हो जाना चाहिये। यह हमारी कर्मस्थली है।

मैं सुझाव देना चाहता हूं और मेरा आग्रह भी है कि यह विधान सभा हमारे उत्तरांचल के लिए वरदान साबित हो हम यहां पर ज्वलंत समस्याओं के बारे में हम चर्चा करें और उनका समाधान करें ताकि उत्तरांचल की जनता का हित हो सके। सत्ता और प्रतिपक्ष को आप समान दृष्टि से देखेंगे तो आपको भी आदर मिलेगा। मैं प्रतिपक्ष से भी निवेदन करता हूं, यहां पर हमारे माननीय श्री राम सिंह सैनी जी, श्री अम्बरीष जी और श्री मुन्ना सिंह चौहान और श्रीमती इन्दिरा ह्रदयेश जी हैं जो ऐसे प्रश्न पूछते हैं कि जवाब देने वाला भी हक्का–बक्का रह जाता है।

सत्ता पक्ष में भी हमारे पास अनुभवी लोग हैं इस टीम के माध्यम से भी मार्गदर्शन मिलेगा जिससे उत्तरांचल का हित होगा। आइये हम सब लोग मिलकर उत्तरांचल के निर्माण में अपना योगदान दें। मैं एक निवेदन और करना चाहता हू सत्ता पक्ष और विपक्ष से कि इस सदन के समय का सदुपयोग होना चाहिए जो कि हमारे उत्तरांचल के हित में है और हम ऐसे विषयों पर समय दें जो लोक महत्व के प्रश्न हों जैसे बेरोजगारी कैसे दूर हो, भ्रष्टाचार कैसे मिटाया जाये आदि–आदि, जिससे हमारे उत्तरांचल का चहुंमुखी विकास होगा। मान्यवर आज आप इस गरिमामयी पद पर विराजमान हैं। मैं आपको बधाई देता हूं कि आपका भविष्य उज्ज्वल हो और हमारे उंत्तरांचल का विकास हो यही मेरी कामना है।

श्री काजी मोहम्मद मोहिउद्दीन–

मान्यवर ! अभी मेरी तारीफ हो रही थी तो मुझे बड़ा अच्छा लगा और अब आपकी तारीफ हो रही है तो आपको अच्छा लग रहा होगा, मैं तो सोचता हू कि शब्दों के माध्यम

से कम, कार्य के पैमाने से इसे नापा जाना चाहिये, एक बार फिर मैं आपको बधाई देता हूं और उम्मीद करता हूं कि जो प्रशंसा आपकी की गयी है उस पीठ पर बैठकर आप पूरी तरह से अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे। धन्यवाद।

श्री अम्बरीष कुमार–

माननीय अध्यक्ष जी मैं आपको इस सदन के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित होने पर बधाई देता हूं और यह कहना चाहता हूं कि आपकी स्थिति उन अध्यक्षों की भांति नहीं है जिनके सामने दृष्टान्तों और निर्णयों का एक लम्बा इतिहास होता है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आपके ऊपर एक ऐतिहासिक जिम्मेदारी है। आपका नाम प्रकाश है और मैं यह आशा करता हूं कि उत्तरांचल की आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसा रास्ता तैयार करेंगे जो कि आपके नाम को सार्थक करता हो और आने वाली पीढ़ियां इस रास्ते से प्रकाश ले सकें ऐसे आपके निर्णय और दृष्टान्त होंगे। मान्यवर, जिस प्रजातंत्र में हम रह रहे हैं और जिस प्रजातंत्र के माध्यम से इस विधान सभा का गठन हुआ है आज हम यहां बैठे हैं, श्रीमन्! मैं कहना चाहता हूं कि कोई भी प्रजातंत्र दृढ़ और मजबूत नहीं हो सकता है जब तक हम आर्थिक और सामाजिक समानता पूर्ण रूप से न कर लें मैं आशा करता हूं आपके निर्णय इसी के अनुरूप होंगे और निश्चित रूप से इस नवसृजित राज्य के कदम जो सामाजिक और आर्थिक समानता की दिशा में उठ रहे हैं उनको सुदृढ़ करेंगे और सम्बल प्रदान करेंगे, मैं यह विश्वास करता हूं। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि आयु और ज्ञान की कोई स्थिति नहीं है यह आवश्यक नहीं है जो बहुत बुजुर्ग हैं वह बहुत अधिक ज्ञानी है और जो नौजवान हैं उनमें ज्ञान की कमी है। मैं इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हूं।

माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी ने आज प्रथम बार अपने सम्बोधन में कहा जिस महापुरुष की बात का उन्होंने स्मरण कराया मैं निश्चित रूप से यह कह सकता हूं कि वह युवाओं के प्रेरणा स्रोत थे। केवल वह ही नहीं– जैसे बात आप करते हैं राम की और कृष्ण की, जितने हमारे धार्मिक आराध्य हैं वह भी नौजवान थे उन्होंने अपने कार्यों से, अपने चरित्र से और अपने निर्णयों से निश्चित रूप से एक नायक का स्थान इस समाज में प्राप्त किया था तो कोई ऐसा कारण नहीं लगता कि अगर आप नौजवान हैं तो आप उनके उदाहरण को अपने जीवन में उतारते हुए उस स्थान पर नहीं पहुंच सकें। ऐसी कोई बात मुझे नहीं दिखाई देती।

दूसरी बात मैं एक और कहना चाहता हूं, अभी माननीय श्री सैनी जी ने कहा मैं भी केशरीनाथ त्रिपाठी जी का आदर करता हूं और निश्चित रूप से उनकी विद्वता का जो निर्णय उन्होंने सदन में दिया उनका कोई सानी भी नहीं है लेकिन जिस निर्णय की तरफ माननीय श्री सैनी जी ने इंगित किया मुझे कहना पड़ता है अगर माननीय त्रिपाठी जी ने सरकार और दल को नहीं बचाया होता और प्रजातंत्र को बचाने का कार्य किया होता तो निश्चित रूप से उनकी गणना पुरूषोत्तम दास टण्डन से अधिक ही होती है यह मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है। मान्यवर, आपसे आशा करना चाहता हूं कि सरकार भी आयेगी, दल भी आयेंगे और चले जायेंगे लेकिन जो निर्णय आप करेंगे वह कालातीत होंगे मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि दल और सरकार को बचाने की बजाय अगर प्रजातंत्र

को और प्रजातंत्र की उन महान संस्थाओं को बचाने का कार्य करेंगे तो आपका नाम आज प्रथम अध्यक्ष होने के नाते इतिहास में लिखा जायेगा परन्तु आपका निर्णय भी उसी इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर लिखा जायेगा। मान्यवर! माननीय मुख्य मंत्री जी ने भी कहा, मैं एक बात कहना चाहता हूं, खास कर यह बात कही जाती है कि विपक्ष को संयम बरतना चाहिए क्या आप यह स्वीकार नहीं करते कि विपक्ष का व्यवहार सत्ता पक्ष के व्यवहार पर निर्भर करता है। यदि प्रतिपक्ष तर्क संगत कहे और सत्ता पक्ष द्वारा उसे स्वीकार न किया जाय तो तब विपक्ष कुंठाग्रस्त होता है और उसके सामने अमर्यादित आचरण करने के अलावा कोई चीज रह नहीं जाती है।

माननीय मुख्य मंत्री जी ने आश्वासन दिया है कि वह प्रतिपक्ष को साथ लेकर चलेंगे। जिसकी शुरूआत कल उन्होंने विपक्ष के सभी लोगों को बुलाकर की। मान्यवर! मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि जो पहल मुख्य मंत्री जी ने की है उसका समुचित उत्तर विपक्ष ने भी दिया है आपके निर्विरोध निर्वाचित होने से विरोध ने भी अपनी बात की पुष्टि की है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आशा करता हूं कि उत्तरांचल का यह सदन विधान सभा में एक ऐसे प्रजातंत्र के लिए इतिहास बनायेगा, जिसके अनुसार आगे आने वाले अध्यक्ष भी इसी के अनुरूप काम करेंगे और हम सब मिलकर देश और प्रदेश की प्रगति के लिए काम करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ पुनः बधाई और धन्यवाद भी देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री केदार सिंह फोनिया–

श्रीमन्! इस गरिमामयी पद पर बैठने के लिए आपको हृदय से बधाई देता हूं। मान्यवर! सबने कहा कि आप कम उम्र के हैं परन्तु विद्वतापूर्ण हैं। मेरा मानना है कि कम उम्र से कोई फर्क नहीं पड़ता बशर्ते की दाढ़ी का साइज ठीक हो। मान्यवर! आप एक सम्पूर्ण अध्यक्ष के रूप में विद्यमान हैं, इसके लिए हार्दिक बधाई देता हूं। मान्यवर काजी जी ने कहा कि प्रशंसा आपकी हो रही है मुझे भी एक दो बार पीठासीन होने का मौका मिला। हमारे अम्बरीष जी जैसे विद्वान माननीय सदस्य के भाषणों को सुनने को मिला, सचमुच यह गरिमामय पद है और आप इसकी गरिमा का अवश्य ख्याल रखेंगे। माननीय मुख्य मंत्री, माननीय विरोधी दल के चौहान जी, बहिन इन्दिरा जी, काजी साहब और अम्बरीष जी ने जो कुछ प्रशंसा में कहा उससे मैं अपने आपको सम्बद्ध करता हूं और एक बात कहना चाहूंगा सचमुच यह एक ऐतिहासिक क्षण है। ठीक 8–9 नवम्बर की रात्रि को जब पूरे उत्तरांचल के चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा था तो देहरादून के परेड ग्राउन्ड में उत्तरांचल का सूरज उग रहा था। 12 बजकर 1 मिनट पर माननीय राज्यपाल जी ने शपथ ली और 12 बजकर 5 मिनट पर माननीय मुख्य मंत्री जी श्री नित्यानन्द स्वामी जी ने शपथ ग्रहण किया और तब उत्तरांचल का सूरज उग चुका था। सरकार भी बन गयी, सरकार में भारतीय जनता पार्टी का बहुमत है, लेकिन एक बड़ी चीज की ख्वाहिश हो रही थी कि किसी भी सरकार की छवि उसकी विधान सभा पर निर्भर करती है। जब तक विधान सभा न हो, नहीं लगता कि सरकार है। जब तक विधान सभा न हो, नहीं लगता कि किस पार्टी की सरकार है। आज उस विधान सभा में आप विराजमान हुए और उत्तरांचल की प्रथम विधान सभा है और आप पीठासीन का विराजमान हुए इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। इतिहास

के पन्नों में दो नाम जुड़ कर आयेंगे। माननीय श्री काजी जी का और आपका और इन दोनों नामों का इस उत्तरांचल की सरकारों तथा जनता को वर्षों तक मार्ग दर्शन मिलता रहेगा यह मेरी आशा है।

मान्यवर! हम लोग बड़ी विधान सभा के अनुभव लेकर आये हैं। हमारे अनुभव कुछ कड़वे भी रहे और मीठे भी रहे। हमने अपने देश के बड़े–बड़े लेजिस्लेचर्स और बड़े–बड़े वक्ताओं को सुना और उनके विद्वता पूर्ण भाषणों को सुना। अम्बरीष जी इसके गवाह हैं, उनकी स्वयं की जिह्वा से सरस्वती निकलती थी और मैं उन्हें गौर से सुनता था और हमारे नरेश जी और प्रमोद तिवारी जी जो फुलझड़ियां छोड़ते थे तो सारा सदन चहचहा जाता था। उन अनुभवों को लेकर हम इस छोटे से सदन में आये हैं मैंने अपनी विदाई के भाषण में कहा था कि हम यहां से अच्छी बातें लेकर देहरादून जा रहे हैं, हमारे देहरादून में लम्बे चौड़े माइक नहीं रहेंगे, मुझे खुशी हुई है कि यहां के माइक का साइज छोटा है। मैं एक निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि हम सबकी सरकार है और हम सब लोगों को मिलकर उत्तरांचल बनाना है और उत्तरांचल को आगे बढ़ाना है। इसकी औद्योगिक प्रगति हो पर्यटन का विकास हो, बिजली और सड़क का विकास हो लोगों का जीवन स्तर बढ़े। इस प्रकार के काम हमको करने पड़ेंगे यह तभी सम्भव है जब हम सब लोग एक साथ होकर चलेंगे।

माननीय श्री काजी साहब के भाषण को मैंने लखनऊ में भी सुना और आज भी सुना तो मुझे लगा कि उनके भाषण में जमीन आसमान का अंतर है और उनका हृदय परिवर्तन हो गया है और अब मैं अम्बरीष जी से भी हाथ जोड़कर कहना चाहता हूं कि उत्तरांचल बन गया है और हरिद्वार तथा उधम सिंह नगर उत्तरांचल के अभिन्न अंग हैं, हम लोग इस बात का संकल्प लें कि उत्तरांचल राज्य केवल पहाड़ियों का राज्य नहीं है बल्कि यह हमारे पर्वतीय और मैदानी क्षेत्र में रहने वाले लोगों का राज्य है हमें कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहिए यदि इस तरह की बात उधर से प्रस्फुटित होकर आयेगी तो निसंदेह यह उत्तरांचल राज्य खुशहाल बनेगा और हम सब लोग एक साथ मिलकर उज्जवल उत्तरांचल की कल्पना को साकार करेंगे जो हमारी भावनायें हैं और कल्पनायें हैं उसके अनुसार हम उत्तरांचल राज्य का निर्माण करने में सफल होंगे। धन्यवाद।

श्री रमेश पोखरियाल ''निशंक''–

श्रीमन्! मैं सबसे पहले आपको बधाई देना चाहता हूं, यह क्षण कोई सामान्य क्षण नहीं है, इस राज्य के गठन से लेकर आज तक का एक–एक क्षण इसका साक्षी होगा और वह इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। मंत्रिपरिषद् के सदस्य के नाते मैंने विधान परिषद् में पूज्य स्वामी जी के संरक्षण में चलने वाली विधान परिषद् को भी निकटता से देखा। गांव और गधेरे से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के हितों के संबंध में मुझे जबाव देना होता था इसका सौभाग्य भी उत्तर प्रदेश में मुझे मिला। आज हम गौरवान्वित हैं कि आपकी अध्ययनशील प्रवृत्ति, आपका जुझारू व्यक्तित्व और अकलुषित मन उत्तरांचल के प्रति आपकी छटपटाहट यह सबके लिए जो यह गरिमामयी पद है एक नई दिशा देगा, यह हमें आशा है।

मैं यह जरूर कहना चाहता हूं कि उत्तरांचल राज्य का निर्माण राजनैतिक इच्छा शक्ति के लिए नहीं हुआ है बल्कि इस मध्य–हिमालय के क्षेत्र को जिसे भारत का भाल कहा जाता है, यदि मस्तिष्क स्वस्थ रहेगा तो शरीर का अस्तित्व भी रहेगा। यदि माथा ही ठीक नहीं रहेगा तो शरीर का अस्तित्व संकटमय रहेगा। यह मध्य–हिमालय पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करता है और मार्ग दर्शन भी करता है। आज हमें संकल्प लेने की आवश्यकता है कि हम पूरी दुनिया और इस देश के अन्दर इस प्रदेश को एक आदर्श राज्य और सदन के रूप में स्थापित करेंगे ताकि लोग यहां आकर के अध्ययन करें और विचार करें। हम सभी लोग मिलकर उत्तरांचल के चहुंमुखी विकास के लिए प्रयास करें। जहां श्री स्वामी जी को 20 वर्ष का लम्बे अरसे का संसदीय अनुभव रहा है आज वह यहां मुख्य मंत्री के रूप में विराजमान हैं, हम सब लोग मिलकर इस प्रदेश का विकास करेंगे। केशरी नाथ जी के विषय में कहा गया, उत्तर प्रदेश में 1990 से 2000 तक कई लोगों को हमने देखा और संसदीय परम्पराओं का अनुभव भी हमें मिला।

मैं कहना चाहता हूं जैसा कि सैनी जी और अम्बरीष जी ने जिक्र किया मैं कहना चाहता हूं जिस तरह से उत्तर प्रदेश में लोकतंत्र का गला घोटा जा रहा था और 6 महीने तक हमें यही नहीं मालूम था कि हम विधायक हैं या नहीं उस समय लोकतंत्र को बचाने के लिए आदरणीय केशरीनाथ त्रिपाठी जी ने जो निर्णय दिया वह अविस्मरणीय है। यह सदन आपसे भी आग्रह करना चाहेगा कि सदन मर्यादित, संस्कृति से युक्त और जनसमस्याओं से जुड़ा हुआ हो जिसमें सदन को और सरकार को मार्गदर्शन मिलता रहे और एक ऐसा वातावरण बने जिसमें सबको विश्वास हो हमारे यहां पर तमाम अनुभवी साथी बैठे हैं हम सब लोग मिलकर एक आदर्श राज्य की स्थापना करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको बधाई देना चाहता हूं।

श्री मुन्ना सिंह चौहान–

माननीय अध्यक्ष जी! आज सदन में संसदीय परम्पराओं का निर्वहन करते हुए और माननीय नेता सदन ने उच्च संसदीय परम्पराओं का निर्वहन करते हुए विपक्ष को विश्वास में लेकर जो आपका आज निर्विरोध निर्वाचन सम्भव हो पाया, इस अवसर पर हम सभी आपको हृदय से शुभकामनायें देते हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि आपके कुशल मार्ग निर्देशन में यह गरिमामयी सदन उत्तरांचलवासियों की सेवा करेंगे। मैं तो यह कहूंगा उत्तरांचल निर्माण के लिए जिन्होंने अपनी कुर्बानियां दी और शहादतें दी उनको स्मरण करने के लिए यही एक तरीका है कि आपके मार्ग निर्देशन में इस सदन के माध्यम से जनमानस, गरीब, मजदूर और मजलूम लोगों की सेवा कर सकें यही हमारी इच्छा और आकांक्षाएं हैं। जैसा कि आपका नाम है प्रकाश पन्त, आपके जो विवेकपूर्ण निर्णय होंगे उसके प्रकाश से सदैव यह सदन जगमगाता रहेगा।

मान्यवर, माननीय सदस्यों द्वारा जब कभी अपनी बात यहां रखी जायेगी और उन पर सरकार द्वारा उदासीन रवैया अपनाया जायेगा तो आपकी पीठ से सरकार को कार्यवाही करने का भी निर्देश दिया जाता है। जैसा कि अभी कोश्यारी जी कह रहे थे कि आपके निर्देशन में निश्चित रूप से उत्तरांचलवासियों की जो समस्यायें हैं, उनका समाधान हो

सकेगा। राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन जी की बात कही गयी और काजी साहब ने उसका उद्धरण भी दिया। मैं कहना चाहता हूं कि यह भी हमारे लिए एक निहायत सौभाग्य की बात है कि इस पीठ पर आप जैसे अध्ययनशील, चिन्तनशील और युवा व्यक्ति विराजमान हैं और नेता सदन के रूप में आदरणीय स्वामी जी, जिन्होंने उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के अन्दर जो संसदीय परम्परायें कायम की और जिन उज्ज्वल परम्पराओं का निर्माण किया मैं कह सकता हूं कि उनकी तुलना राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन से की जा सकती है। इस बात को कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है। श्रीमन्! जो हमारी पेरेन्ट एसेम्बली है–विधान सभा कुछ अपवादों को यदि छोड़ दिया जाय तो निश्चित ही वहां पर उज्ज्वल परम्परायें रही हैं और स्वस्थ संसदीय परम्परा रही है।

मान्यवर, आदरणीय केशरी नाथ त्रिपाठी जी का भी यहां पर जिक्र किया गया, क्या मजबूरी रही होगी, कुछ बातों को छोड़ दिया जाय जिससे उनके स्तर में थोड़ी सी कमी आयी उन्होंने कहा था जब तक मैं उस पीठ पर रहूं, मैं किसी दल के सदस्यता से त्याग पत्र नहीं दूंगा, जिस तारीख तक मैं इस पद पर हूं मैं दलगत राजनीति से अपने को अलग रखूंगा। इसलिए मैं चाहता हूं आज से आपका कोई भी बयान बाहर ऐसा नहीं आये जिससे कि लोग आपकी प्रशंसा करने में कोताही बरतें। जैसा कि श्रीमती इन्दिरा जी ने कहा कि मैंने यह कहा कि माननीय विधान परिषद् के सदस्य, विधान सभा के सदस्य नहीं हो सकते यह एक अलग बात है परन्तु माननीय मुख्य मंत्री जी मैं इस बात को जरूर कहूंगा कि जिसे हम उच्च सदन के सदस्य कहते थे उनके सम्मान को घटा करके आप उन्हें नीचे सदन में ले आये। मान्यवर मैं कहना चाहता हूं कि आप जो निर्णय लें वह दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ लें, उसमें हम आपके साथ रहेंगे। कहा गया है कि "हाउस इज द मास्टर ऑफ इट्स ऑन बिजनेस" कई बार यहां पर विशेषाधिकार के मामले भी आयेंगे और उन पर आपको निर्णय लेना होगा। लोक सभा के पहले स्पीकर मावलंकर जी ने लिखा था और जिसके बारे में पहले ही कह चुका हूं और श्री काजी जी ने चौधरी चरण सिंह और नारायण दत्त तिवारी जी का जिक्र किया था। यदि हम ऐसी ज्वलंत परम्परायें कायम करने में सफल हो सकेंगे तो हम प्रदेश का विकास सही दिशा में कर पायेंगे।

मावलंकर जी ने कहा था, "यदि सरकार संख्या बल के आधार पर निर्णय करेगी मैरिट के आधार पर नहीं करेगी तो संसदीय संस्थायें खत्म हो जायेंगी।" हम लोग विधायक हैं विधान का निर्माण करते हैं। इसलिए हम जो यहां पर चर्चा करें वह मैरिट के आधार पर करें, नीति निर्धारण संख्या बल के आधार पर नहीं होना चाहिए। श्री कोश्यारी जी ने 33 वर्ष के उस युवा की बात की जिसने वर्ल्ड रिलिजन्ज कान्फ्रेन्स में पूरी दुनिया को कहा था "ब्रदर्स एण्ड सिस्टर्स ऑफ अमेरिका" तो दुनिया में लगा एक सख्श ऐसा है जो "वसुधैव कुटम्बकम्" की बात कहता है। मैं यहां पर यह भी कहना चाहता हूं कि "सम पीपुल आर बिहाइन्ड द टाइम, सम आर विद द टाइम एण्ड फ्यू पिपुल्स आर एहेड ऑफ टाइम", मैं उम्मीद करता हूं आप अपने आचरण से इसको साबित कर देंगे क्योंकि गांधी जी समय के साथ नहीं थे बल्कि समय से बहुत आगे थे। 50–60 साल पहले जो उन्होंने कहा था वह आज भी प्रासंगिक है।

मान्यवर! जिस प्रकार ज्युडीसियरी इन्डिपेन्डेन्ट होनी चाहिए उसी प्रकार आपका विधान सभा सचिवालय भी इन्डिपेन्डेन्ट होना चाहिए। क्योंकि विधान सभा सचिवालय के अधिकारी और कर्मचारी आपके मार्फत काम करते हैं, यदि वह एग्जीक्यूटिव के नियंत्रण में आयेंगे तों उससे न केवल हमारे, बल्कि आपके अधिकारों का भी हनन होगा। विधान सभा के ऊपर किसी का नियंत्रण नहीं होना चाहिए। संविधान के अनुच्छेद 187 में यह दिया भी गया है। कई बार माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी और मुख्य मंत्री जी को आप अपने चैम्बर में कॉल ऑन करते हैं और विचार विमर्श करते हैं, इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि इस पीठ की गरिमा बनी रही और आपके द्वारा जो निर्णय दिये जांय वह एक नजीर बने आपका मार्ग निर्देशन हमको मिलता रहे मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं और आपको पुनः बधाई देता हूं। धन्यवाद।

श्री हरवंश कपूर–

मान्यवर! यह एक ऐतिहासिक अवसर है और आप इस गरिमामय पीठ पर विराजित हैं मैं आपको बधाई देता हूं। मान्यवर! उत्तरांचल राज्य का गठन भी अपने आप में ऐतिहासिक है। एक लम्बा संघर्ष, जिसमें अनेक नवयुवकों ने शहादत दी है, अनेक मां–बहनों ने अपमान सहा है और अनेक आन्दोलनकारियों ने आन्दोलन में रत रह कर इसका आधार बनाया है। उत्तरांचल राज्य का गठन अपने आप में एक इतिहास है और इसका आधार क्षेत्रीय विकास से सीधे सम्बन्धित है। यहां की बेरोजगारी, यहां के दूर दराज के क्षेत्र तक जन सुविधायें पहुंचाना शिक्षा और चिकित्सा की उचित व्यवस्था करना है। आज उत्तरांचल की 70 से 80 लाख जनसंख्या, यहां के लोग, हमसे अपेक्षा करते हैं। निश्चित रूप से इस सदन के माननीय सदस्य इसमें अपना योगदान देंगे।

मान्यवर! आपकी पीठ से हम सब यह अपेक्षा करते हैं कि सत्ता पक्ष और विपक्ष अपने–अपने विचारों से अपनी समस्याओं को आपके समक्ष रखेंगे और आपका संरक्षण उन्हें प्राप्त होगा। मान्यवर अनेक विद्वान साथियों ने अपने विचार यहां रखे मैं अपने को उनसे सम्बद्ध करता हूं। एक ओर जहां नेता सदन के रूप में हमारे बीच में एक अनुभवी जिनका अपना एक इतिहास है वहां आप जैसे नवयुवक इस गरिमामयी पद पर विराजित हैं। दोनों आपस में मिल कर उत्तरांचल के इतिहास को बनाये रखेंगे और जिन्होंने शहादत दी है और आन्दोलनकारियों के प्रति, आप न्याय कर सकेंगे। अपनी बात समाप्त करने से पहले माननीय प्रधानमंत्री जी और अन्य जो हमारे सांसद हैं उनके प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूं जिनके कारण उत्तरांचल राज्य का गठन सम्भव हो पाया। मैं आपको एक बार पुनः शुभकामना देना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन आज यह एक ऐतिहासिक क्षण, जब इस सदन के सम्भवतः सबसे कम उम्र के एक सदस्य को सभी माननीय सदस्यों ने एक मत हो कर नवोदित राज्य उत्तरांचल के इस गरिमामयी पद पर आसीन किया जहां मेरे लिए एक व्यक्तिगत उपलब्धि का क्षण है। वहीं सम्भवतः संसदीय इतिहास में भी अविस्मरणीय बन पड़ा। इसके लिए मैं आप सभी सम्मानित सदस्यों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूं। अभी इस सदन में जिन–जिन माननीय सदस्यों ने विचार रखे और जो आशायें और विश्वास मर्यादाओं के

अन्तर्गत मुझसे अपेक्षित की गयी हैं। मैं आज इस अवसर पर एक वायदा करना चाहता हूं कि जो अपेक्षाएं इस सम्मानित सदन के नेताओं ने की हैं उन सभी की अपेक्षाओं पर आपके ही मार्ग निर्देशन पर मैं खरा उतरने का प्रयत्न करूंगा।

संसदीय लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण, संवैधानिक मर्यादाओं का पालन, कार्य व्यवहार, दलगत राजनीति से ऊपर और विधान सभा सचिवालय को न्याय पालिका के रूप में करना चाहूंगा। यह उत्तरांचल राज्य कोई जाति, भाषायी और क्षेत्रीय आधार पर नहीं बना है। उत्तरांचल के 13 जनपदों की जनता, भौगोलिक विषमताओं के कारण अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए टकटकी लगाकर देख रही है और इस सम्मानित सदन से यह अपेक्षा कर रही है कि उनकी समस्याओं का निराकरण होगा। हम सभी लोग इस सम्मानित सदन के माध्यम से यह प्रयत्न करेंगे कि विषम भौगोलिक परिस्थितियों के इस नवोदित राज्य की अपनी अलग तरह की समस्यायें और निराकरण हैं। जब हम सब लोग मिलकर इसके लिए प्रयत्न करें।

मान्यवर! अब यह तो भविष्य के गर्भ में छिपा है कि सदन किस प्रकार चलता है और फिर आप सभी लोग जो माननीय सदस्य यहां पर हैं वे सब के सब बहुत अनुभवी, विद्वान और जन नेता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। मैं आप सभी लोगों से यह अपेक्षा करूंगा कि चूंकि मुझमें अनुभव की अवश्य कमी है और मैं यह भी मानता हूं कि जिस प्रतिष्ठित पद पर आप सब लोगों ने मिलकर मुझको बैठाया है इसके गुरूत्वर दायित्व के निर्वहन में आप सभी लोगों का सहयोग मिलेगा और मार्गदर्शन मिलेगा। तभी मैं इस गुरूत्वर दायित्व के निर्वहन करने में समर्थ हो पाऊंगा। आज इस अवसर पर ह्रदय से आभार व्यक्त करते हुए विशेष तौर से इस सदन में पक्ष और प्रतिपक्ष के सभी नेताओं के प्रति ह्रदय से आभार व्यक्त करते हुए यह अवश्य विश्वास करता हूं कि हमारे उत्तरांचल राज्य को एक परम वैभव तक पहुंचाकर भारतवर्ष में अपना एक अलग स्थान बनायेगा। यह एक अच्छी बात है कि इस विधान भवन में "न" लाबी नहीं है जो इस बात का संकेत देती है कि हम सब लोग मिल बैठकर निस्तारण करेंगे। चूंकि 2 बजे से महामहिम जी का अभिभाषण होना है और सदन उठने के बाद कार्य मंत्रणा समिति की बैठक होनी है इसलिए हम अब 2 बजे पुनः बैठेंगे।

तत्पश्चात् सदन की कार्यवाही 4 बजकर 02 मिनट पर दिनांक 16 जनवरी, 2001 के 11 बजे पूर्वाह्न तक के लिये स्थगित हो गयी।

देहरादून
दिनांक 12 जनवरी, 2001

महेश चन्द्र,

सचिव, विधान सभा,
उत्तरांचल, देहरादून।

पी0एस0यू0 (आर0ई0) 1 विधान सभा/174–3–5–2002–200 प्रतियां (कम्प्यूटर/ऑफसेट)।